HISTORY

B.A.(Hon's) PART-II

Paper-IV (History of Modern Asia(China & Japan))

Unit-II (Opening Of Japan)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 89

जापान का खुलना

(Opening Of Japan)

जापान में तोकुगावा शासनकाल(1603-1867) में पूर्ण शांति बनी रही। आर्थिक दृष्टि से भी जपान की काफी प्रगति हुई। इस प्रकार जब जापान संसार से पृथक होकर सुख चैन की बंसी बजा रहा था कि 19 वीं शताब्दी के मध्य में पश्चिमी देशों ने उसका द्वार थप थपाया और अंत में उसके एकांत जीवन को नष्ट कर उसे विश्व के रंगमंच पर ला दिया।

प्रारंभिक संपर्क :-

12 वीं शताब्दी तक यूरोप के लोग जापान के नाम या अस्तित्व से परिचित नहीं थे। 13 वीं शताब्दी में मंगोल दरबार में रहने वाले मार्कोपोलो ने पहले पहल जापान का नाम सुना और उसके बाद पुनर्जागरण काल में यूरोप के नाविक जब एशिया के समुद्री मार्गों की छानबीन करने लगे तो वे जापान भी पहुंचे। 1543 ई को सबसे पहले पुर्तगाली जापान में अपना कदम रखे। सातसुमा रियासत के लोगों ने उसका बड़ा सत्कार किया और वहां के डैम्यों ने उनसे अनेक अस्त्र शास्त्र खरीदे और बंदूक तोप और बारूद बनाने की कला सीखी और 1555 ई तक वे स्वयं बड़ी मात्रा में ऐसे हथियार बनाने लगे।

प्रारंभिक पुर्तगाली यात्रियों के आगमन के कुछ ही वर्षों के उपरांत 1549 ई में कुछ ईसाई पादरी भी सातसुम पहुंचे। उनका भी जापानियों ने स्वागत किया और उन्हें धर्म प्रचार की स्वीकृति दे दी गई।

16 वीं शताब्दी के अंत तक स्पेनिश और 17 वीं शताब्दी के प्रारंभ में डच तथा अंग्रेज नाविक भी जापान पहुंचने लगे। यह यूरोपीय यात्री नागासाकी में अपनी कोठियां बनाकर व्यापार करने लगे और ईसाई धर्म प्रचारक भी स्वतंत्रता पूर्वक धर्म प्रचार करने लगे जापानियों ने शुरू में उन पर किसी तरह का प्रतिबंध नहीं लगाया।

यूरोपियनों की बदनियति और जापानी प्रतिक्रिया:-

जब से जपान का पश्चिमी देशों से संपर्क कायम हुआ तब से उन्होंने लगातार उनके साथ अच्छा संबंध बनाए रखने का प्रयास किया। जापान ने यूरोपियों के व्यापार, धर्म ज्ञान, विज्ञान आदि में रुचि प्रदर्शित की और उनका समुचित आदर सत्कार किया। लेकिन यूरोपियों का रवैया और उनकी नियत शुरू से ही खराब थी। वे आपस में ही लड़ते झगड़ते थे। डच लोग अंग्रेज तथा

स्पेनियों के खिलाफ जापानियों को भड़काते थे और अंग्रेज एवं स्पेनिश डचों की शिकायत करते थे। इस कारण जापानी उन्हें शंका की दृष्टि से देखने लगे इसके अतिरिक्त जापान के समुद्र तट के समीप इन यूरोपीय शक्तियों के बीच कई लड़ाइयां हुई। इन सारी घटनाओं ने जापान की धारणा में भारी परिवर्तन कर दिया। जापानी लोग उन्हें अवांछनीय तत्व समझने लगे और उनकी नियत पर उनका संदेह बढ़ गया। इसी बीच एक घटना हुई। 1556 ई में स्पेन का एक जहाज टूट गया और उसका मुख नियामक जापानी अफसरों के पास लाया गया। उसे स्पेनी ने यह कह दिया कि स्पेनियों की निति यह है कि वह विदेशों में पहले व्यापारी और धर्म प्रचारक भेजते हैं और जब उनके अड्डे कायम हो जाते हैं तो वह फौज भेज कर जल्दी से उस देश को जीत लेते हैं और अपने साम्राज्य में मिला लेते हैं। इस तरह के सनसनीखेज स्वीकारोक्ति से जापानी अधिकारियों के कान खड़े हो गए। इसके बाद यह खबर मिली कि मेक्सिको से एक स्पेनी बेड़ा मोलुक्कस जीतने के लिए चल पड़ा है। 1612 ई में स्पेनियो ने जापानी तट का सर्वेक्षण भी शुरू कर दिया। इन सब बातों को देखकर शोगुन को विश्वास हो गया कि यूरोपीय लोगों के मन में कपट है और उनकी सुरक्षा को खतरा है। सबसे पहले उसने इसाई मिशनरियों की गतिविधियों पर सख्ती से पाबंदी लगा दिया। 1623 ई में ईएमीतसू जापान का शगुन बना। उसका ख्याल था कि स्पेनी सभी बुराइयों की जड़ है। 1624 ई में उसने आदेश दिया कि सभी स्पेनी जापान छोड़कर निकल जाए। जापानी व्यापारियों को भी आदेश दिया गया कि वे मेक्सिको और फिलीपींस से व्यापार ना करें। इसमें पुर्तगालियों पर भी प्रतिबंध लगा दिया। गया। 3 अगस्त 1640 को चार पुर्तगाली दुत और उनके संतावन साथियों की हत्या कर दी गई। इस प्रकार जापानियों ने विदेशों से अपना संबंध तोड़ लिया और और चीनी व्यापारियों को व्यापार करने को सीमित छूट दिया क्योंकि वे जापान में व्यापार के सिवा कोई दूसरी हरकत नहीं करते थे। इस प्रकार जापान अपने आपको अगले 2 शताब्दियों तक कठिन एकांतवास में रखा।

रूस और इंग्लैंड से संपर्क:-

18 वीं शताब्दी के प्रारंभ में प्रशांत महासागर में यूरोपियों की हलचल बहुत बढ़ गई। जापान के सागर में रूस के जहाज आने-जाने लगे। रूस जापान के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित करना चाहता था। 1792 ई में एक रूसी प्रतिनिधि दल जापान पहुंचा। उसे तुरंत आदेश दिया गया कि वे केवल नागासाकी में ही उतर सकता है। 1804 ई में एक दूसरा रूसी प्रतिनिधि दल नागासाकी पहुंचा और उसने व्यापार के बारे में बातचीत चलाएं। लेकिन उसे उत्तर मिला के जपिन को विदेशी व्यापार की जरूरत नहीं है। इस कारण जापान और उसके संबंधों में बड़ा तनाव आ गया। लेकिन उस समय रूस यूरोप में नेपोलियन के साथ ही युद्ध में फंसा हुआ था। अतः जापान की ओर वह विशेष ध्यान नहीं दे सका।

रूस के बाद ब्रिटेन ने जापान में घुसने का प्रयत्न किया। 1793 ई में मेकार्टन को जापान जाने का आदेश हुआ। लेकिन जापान ने उसे आने की इजाजत नहीं दी। 1819 ई में अंग्रेजों ने सिंगापुर पर अधिकार कर लिया और वे किसी तरह जापान में प्रवेश पाने का प्रयास करने लगे। इस क्रम में अंग्रेज और जापानी नाविक में 1824 ई में एक मामूली टक्कर हो गई। इससे चीढ़कर जापानी अधिकारियों ने 1825 में आदेश दिया के यदि कोई विदेशी जहाज जापान में उतरेगा तो उसे गोली मार दी जाएगी। लेकिन 1842 में इस कानून को कुछ नरम किया गया। इसका मुख्य कारण था प्रथम अफीम युद्ध में जापान की पड़ोसी चीन की पराजय। इससे जापान को भय लगने लगा। अतः जापान ने डच बंदूकों का आयात कर अपनी सेना को सुदृढ़ किया। और जापान अपनी एकांतिक नीति पर डटा रहा।

अमेरिका और जापान का संपर्क:-

जापान के ऊपर पश्चिमी संकट संयुक्त राज्य अमेरिका की ओर से आया न कि यूरोप के किसी देश द्वारा और जिस प्रकार अफीम के युद्ध में चीन का द्वार विदेशियों के लिए खोल दिया था, उसी प्रकार अमेरिका के घुसपैठ के कारण जापान का द्वार भी विदेशियों के लिए खुल गया।

उन्नीसवीं सदी के प्रारंभ से ही जापान में अमेरिका की रुचि बढ़ रही थी। क्योंकि प्रशांत महासागर में उसकी व्यापारिक गतिविधियां बड़े जोरों से बढ़ने लगी थी और वह एशिया में अपने प्रभाव का विस्तार करना चाहता था। इस क्रम में ज्यों ज्यों अमेरिका ने अपने पैर पश्चिम में बढ़ाए त्यों त्यों जापान से उसका संपर्क अवश्यंभावी नजर आने लगा। 1846 ई में एक अमेरिकी

जहाज कठिनाई में फंस गया और उसने जापान के एक बंदरगाह में शरण लेनी चाहिए, लेकिन जापान ने इसके लिए अनुमति नहीं दी। अत: अमेरिका यह महसूस करने लगा कि प्रशांत महासागर के व्यावहारिक संबंध स्थापित किया जाए।

अतः 20 जुलाई 1846 ई को अमेरिकी नौसेना का एक अधिकारी दो जहाज लेकर जापानी बंदरगाह पर उतरा और व्यापारिक संबंध के लिए प्रार्थना की। लेकिन जापानी सरकार ने इनकार कर दी। 1853 ई में एक दूसरा अधिकारी चार युद्ध पोतों के साथ आया और जापान के अधिकारियों से प्रार्थना की कि वे जापान के बंदरगाहों में अमेरिकी युद्धपोत को ठहरने की सुविधा दे। उसने उपहार के साथ सम्राट के नाम एक पत्र भी दिया। इसके बाद वह रवाना हो गया लेकिन रवाना होने से पहले उसने जापानियों को चेतावनी दे दी कि अगले वर्ष वह अधिक शक्तिशाली बेड़ों के साथ उत्तर लेने पुन: आएगा। फरवरी 1854 ई में कमोडोर पेरी 3 भाप के जहाज और 5 यान लेकर फिर आ पहुंचा। पेरी आते ही जापान से संधि करने की जिद की। वस्तुतः शोगुन ने जल्दबाजी में डैम्यों की एक सभा बुलाई। इसमें विभिन्न मत प्रकट किए गए। एक पक्ष विदेशियों के विरुद्ध था तथा दूसरा पक्ष संधि के पक्ष में था। अतः काफी सोच विचार कर दूसरे पक्ष की बात मान ली और इसके परिणाम स्वरूप बहुत ही हर्ष पूर्ण वातावरण और सामाजिक रस्मों के बीच कानागावा में संधि की वार्ता आरंभ हो गई तथा 31 मार्च 1854 को यह संधि संपन्न हो गई

कानागावा की संधि के अनुसार जापान ने अमेरिकी जहाजों को अपने बंदरगाह पर ठहरने कोयला पानी लेने तथा यात्रियों नाविक और व्यापारियों से अच्छा व्यवहार करने की बात मान ली। दोनों देशों के प्रतिनिधियों के आदान-प्रदान की व्यवस्था हुई। यह भी तय हुआ कि अन्य देशों को जापान में जो भी अतिरिक्त सुविधाएं दी जाएगी वे संयुक्त राज्य अमेरिका को अपने आप उपलब्ध होगी।

यूरोपीय देशों से संधि:-

कानागावा की संधि के साथ ही विदेशियों के लिए जापान का द्वार खुल गया और शीघ्र ही अन्य राष्ट्रों के प्रतिनिधि भी पेरी का अनुसरण करते हुए जापान पहुंचे और जापान के साथ संधि करने में सफल रहे। 1856 ईस्वी तक ब्रिटेन रूस और अमेरिका को जापान में विस्तृत अधिकार मिल गए और जापान के सन्यास और एकांतिक जीवन का अंत हो गया।

संधियों का परिणाम:-

इन संधियों के परिणाम यह हुआ कि इन संधियों ने सदियों से बंद जापान का द्वार विदेशी व्यापार के लिए खोल दिए और जापान के पृथकवादी जीवन का अंत हो गया। जापान के द्वार खोलने से जापान पश्चिमी ताकत के रहस्य को जाना और उसके अनुसार ही अपने आप को ढालकर अपना सर्वांगीण विकास किया और कुछ ही दिनों में वह संसार की एक महाशक्ति बन गया। जापान का द्वार खुलने का एक और परिणाम हुआ कि शोगुन की बड़ी बदनामी हुई और 1868 ईस्वी में जापान में एक रक्तहीन क्रांति हुई और जापान में मेजी पुनर्स्थापना हो गए

धन्यवाद